# अनिर्वचनीयाद्वैतवाद तुलसी के सन्दर्भ में

**डॉ0 देवेशचन्द्र दुबे**

स्वामी नरहरिदासजी जगद्गुरु अनन्ताचार्यजी के शिष्य थे, किन्तु यह कथन रामानन्द सम्प्रदाय को न जानने वालों का है, और नितान्त गलत है। अनिर्वचनीयता एवं अकथनीयता को बताते हैं–

'तेहि बल मैं रघुपति गुन गाथा।'

अर्थात् उसी बल से महिमा का यथार्थ वर्णन नहीं, परन्तु महान फल देने वाला भजन समझकर भगवत् कृपा के बल पर 'कहिहउँ नाइ राम पद माथा, से भी अनिर्वचनीयता सिद्ध है। इस प्रकार लंकाकाण्ड में प्रभु श्रीराम की अनिर्वचीनयता सिद्ध होती है। इस प्रकार उत्तरकाण्ड में प्रभु श्रीराम की अनिर्वचनीयता सिद्ध होती है। अतः भलीभॉति यह सिद्ध होता है कि तुलसीदास जी ने प्रभु श्रीराम को अनिर्वचनीय (अकथनीय) ही मानते हैं।